# सेन्ट्रल जोन इंश्योरेन्स एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से सम्बद्ध)

**प्रभांजलि, 33, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर ( छ.ग. )**

**अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती**

**महासचिव : का. बी. सान्याल**


**परिपत्र क्र. : 01/2016**

**दिनांक : 01.01.2016**

## मध्य क्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों के नाम

**प्रिय साथियों,**

## विषय : स्वागत नववर्ष 2016

विदा होते वर्ष 2015 और नववर्ष 2016 के आगमन की बेला में हम विश्व के समस्त मेहनतकशों के साथ-साथ देश के श्रमिक वर्ग तथा मध्यक्षेत्र के समस्त बीमा कर्मियों को अपनी क्रांतिकारी शुभकामनायें प्रेषित करते हैं।

निश्चय ही, नववर्ष के आगमन का मौका नव विश्वास के साथ आगे बढ़ने के संकल्प के उद्घोष का भी अवसर होता है इसलिये, हम नववर्ष 2016 के मौके पर, विश्व स्तर की शोषित-पीड़ित जनता के विश्व मानवता की हिफाजत में संघर्ष की सफलता का भी उद्घोष करते हैं।

वैश्विक स्तर पर दुनिया की दो तिहाई से भी अधिक आबादी आज भूखमरी, अशिक्षा, गरीबी, वंचना, शोषण, पर्यावरण असंतुलन, युद्धोन्मादी नीतियां, आतंकवाद और सर्वोत्तम साम्राज्यवादी नवउदारवादी नीतियों के आक्रामक हमलों की पीड़ा से कराह रही है। इसलिये, अमरीका सहित समूची दुनिया में विगत वर्षों में आम मेहनतकशजनों का तीखा संघर्ष उभरा है। यह संघर्ष बड़ी-बड़ी हड़तालों की वैश्विक कार्यवाहियों में भी प्रतिध्वनित हुआ है, हमें विश्वास है कि नववर्ष में विश्व मेहनतकशों का यह संघर्ष, शोषण आधारित समाज के खिलाफ शोषण रहित समाज के निर्माण के संघर्ष की राह पर आगे बढ़ने और संगठित रूप में विकसित होने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

भारत की आम जनता की स्थिति भी इन वैश्विक परिस्थितियों की त्रासदपूर्ण स्थिति से भिन्न नहीं है। वर्तमान मोदी सरकार की साम्राज्यवाद व पूंजीपतिपरस्त नीतियों की मार भारत के आमजन व मेहनतकश भी भोग रहे हैं। ''अच्छे दिन'' का तथाकथित नारा, काले धन की 150 दिनों में वापसी का वादा, हर नागरिक के खातों में 15 लाख रू. पहुंचाने का दावा, न खाने दूंगा और न खाऊंगा का ऐलान अब राजनैतिक जुमले में बदल गया है। नतीजतन महंगाई की मार में पहले प्याज की कीमतों ने आंसू रूलाये अब दाल की कीमत ने ''घर की मुर्गी दाल बराबर'' का मुहावरा ही बदल दिया क्योंकि मुर्गी की कीमत से दाल की कीमत कहीं अधिक ज्यादा हो गई है। पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गिरावट के बावजूद जनता की जेबों पर राहत नहीं बल्कि डकैती ही पड़ रही है। जिन नीतियों के नकारे जाने के चलते वर्तमान सरकार सत्तासीन हो पायी, इस सरकार के द्वारा भी वही नवउदार की नीतियां ढ़ोयी और थोपी जा रही हैं, जिसने किसानों को आत्महत्या, मजदूरों को काम से बाहर करने, बेरोजगार नौजवानों को रोजगार की अनुपलब्धता और शिक्षा के बाजारीकरण व महंगी शिक्षा के जरिये छात्रों को शिक्षा से बाहर धकेलने, स्वास्थ्य क्षेत्र में निजीकरण की मार की ही सौगात दी है। यही कारण है कि तमाम आंकड़ों की बाजीगरी और विदेशी पूंजी को मोहित करने तमाम कानूनों में ढीलों के बावजूद अर्थव्यवस्था मांग की कमी और संकुचन के गहरे दौर से गुजर रही है। साल 2015 में किसानों की बढ़ती खुदकुशी की घटनायें और रोजगार संकुचन की हकीकत इसी का प्रमाण है। लेकिन आम जनता का इस दौरान मुखर प्रतिरोध भी सामने आया है। भू-अधिग्रहण अध्यादेश के खिलाफ किसानों का जबर्दस्त देशव्यापी प्रतिवाद इसकी मिसाल है, जिससे सरकार को इस अध्यादेश को रोकना पड़ा है। समस्त ट्रेड यूनियनों की 2 सितम्बर 2015 को हुई मजदूरों की देशव्यापी हड़ताल भी इसका ज्वलंत उदाहरण है, जिसमें 15

करोड़ से भी अधिक मेहनतकशों की भागीदारी रही। निश्चय ही इस वर्ष श्रमिकों का यह संयुक्त संघर्ष और तेज होगा।

मेहनतकशों के तीखे होते संघर्ष और आम जनता के बीच मोदी सरकार की छबि के गिरते ग्राफ का नमूना बिहार चुनाव में भी देश ने देखा। अपनी गिरती साख से ध्यान बंटाने ही भाजपानीत सरकार अपने मूल राजनैतिक दर्शन के आधार पर देश में साम्प्रदायिक विद्वेष की घृणित राजनीति को पुष्पित करने में लगी है। दादरी की शर्मनाक घटना, कम्युनिस्ट नेता गोविंद पंसारे व पूर्व कुलपति कलबुर्गी की हत्या, अंधविश्वास के खिलाफ सशक्त योद्धा दाभोलकर की हत्या, फिल्म शिक्षण संस्थान में छात्रों के विरोध के बावजूद आर.एस.एस. के लोगों की नियुक्ति, दलितों के खिलाफ हिंसक वारदातें और असहिष्णुता के खिलाफ देशभर में साहित्यकारों, रंगकर्मी, वैज्ञानिकों, बड़ी औद्योगिक हस्तियों के उभरते स्वरों में भी प्रतिध्वनि उभरी है कि, इस सरकार से जनता के हो रहे मोहभंग की पृष्ठभूमि में जनता के विभिन्न हिस्सों की बढ़ती एकजुट संघर्षों की धार को बोथा करने पुन: साम्प्रदायिक उभार की दिशा सुनिश्चित की जा रही है। यह घटनाक्रम अनेकता में एकता की हमारी विरासत के साथ-साथ देश की एकता-अखण्डता के लिये ही गहरे खतरे उत्पन्न करता है। एक मेहनतकश के नाते इसलिये ही नववर्ष में हमें हमारी वर्गीय एकता की हिफाजत में ऐसी तमाम साम्प्रदायिक कोशिशों को नाकाम करने, पूर्व से अधिक चट्टानी एकता सुनिश्चित करना होगा।

राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग के खिलाफ जनतंत्र का गला घोंटकर बीमा कानून संशोधन विधेयक पारित करने के वर्तमान मोदी सरकार के काले कारनामों का भी यह वर्ष साक्षी रहा। राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग के समक्ष इससे उपजी नई चुनौतियों का भी हमें मुकाबला करना होगा। निश्चय ही इस प्रक्रिया में पालिसीधारक, अभिकर्ता, विकास वाहिनी और राष्ट्रीयकृत बीमा उद्योग के सभी कर्मियों की व्यापक एकता के जरिये आगामी दिनों में भी इस संघर्ष को विकसित करने के रास्ते में हमें आगे बढ़ना होगा।

यह वर्ष, विपरीत परिस्थितियों में भी एक बेहतर वेतन पुनर्निर्धारण प्राप्ति की सफलता वर्ष के रूप में भी दर्ज हो रहा है, निश्चय ही नववर्ष की शुरूआत इस उपलब्धि के लाभों को प्राप्त करने से होगी और इससे नये आत्मविश्वस से लबरेज होकर हम नववर्ष में इस सफलता को संगठन में तब्दील कर, हर किस्म की चुनौती का मुकाबला करने अपने को सक्षम बनायेंगे, इन्हीं विश्वास के साथ पुन: नववर्ष की असंख्य शुभकामनायें।

**क्रांतिकारी अभिवादन के साथ,**

आपका साथी

**( बी. सान्याल )**
महासचिव

# दुनिया के मजदूरों एक हो



मुद्रक : एक्सेल ऑफसेट प्रिन्टर्स, फूल चौक, रायपुर (छ.ग.) दूरभाष : 0771-4053295